पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

जीवामृत

पौधों की स्वास्थ्यवर्धक औषधि

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

जीवामृत क्या है?

जीवामृत एक प्रभावकारी जैविक खाद व कीटनाशक है जो फसलों, सब्जियों या फलों आदि के पौधों के विकास के साथ–साथ हानिकारक रोगों और कीड़ों से भी रक्षा एवं उपज की पैदावार बढ़ाने में भी काफी कारगर है।

जीवामृत
खेत और फसल का सच्चा मित्र

रघुनाथनगर (छत्तीसगढ़) में एकीकृत कृषि विकास प्रणाली के तहत जैविक खाद जीवामृत बनाने का प्रशिक्षण कार्यक्रम

जीवामृत को उपयोग करने का तरीका

200 लीटर जीवामृत की मात्रा लगभग एक एकड़ खेत के लिए काफी होती है। सिंचाई के दौरान पानी के साथ इसको जमीन में सीधे डाल सकते है या कीटनाशक के रूप में इसका छिड़काव सीधे पौधों में भी कर सकते हैं (1 भाग जीवामृत और 5 भाग पानी)। इसके अलावा फलदार वृक्षों के चारों तरफ 25–50 सेंटीमीटर नाली खोदकर, उसमें पत्ते आदि भरकर जीवामृत से तर करने से पौधों या पत्तों की खाद में बदलने की प्रकिया भी तेज हो जाती है। इसके 5–6 स्प्रे फसलों के लिए पर्याप्त होते हैं।

जीवामृत बनाने के लिए आवश्यक सामग्री

1. गौमूत्र	–	10 लीटर
2. गोबर	–	10 किलोग्राम
3. चने का आटा/बेसन	–	2 किलोग्राम
4. गुड़	–	1 किलोग्राम
5. प्लास्टिक ड्रम	–	200 लीटर
6. पानी	–	180 लीटर

जीवामृत बनाने की प्रक्रिया

➥ सभी सामग्रियों को प्लास्टिक ड्रम में डाल दें। फिर एक लकड़ी की सहायता से सुबह शाम घड़ी की दिशा और विपरीत दिशा में 5 से 10 मिनट तक अच्छी तरह से हिलायें।

➥ यह प्रक्रिया लगभग 6 दिन या एक हफ्ते तक दोहरायें। जब घोल में बुलबुले आने बंद हो जायें तो समझ लीजिये जीवामृत बनकर तैयार है। फिर किसी सूती कपडे से इसे छान ले। ड्रम को किसी छायादार स्थान में रखें।

जीवामृत बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

➥ इसे बनाने के लिए मिटटी या प्लास्टिक का बर्तन ही इस्तेमाल करें। लोहे या अन्य धातु के बर्तन में इसे ना डालें।

➥ एक हफ्ते पुराना छायादार स्थान में रखा गोबर ही इस्तेमाल करें।

➥ जीवामृत का प्रयोग बीज बोने के 21 दिन बाद सिंचाई के साथ करना चाहिए और 21 दिन के अंतराल बाद दुबारा इसका प्रयोग सिंचाई के साथ करें।

➥ जीवामृत तैयार होने के एक हफ्ते के अंदर ही इसका प्रयोग कर लेना चाहिए और दुबारा उपयोग के लिए इसे फिर से बनाना चाहिए।

जीवामृत से होने वाले लाभ

जीवामृत के प्रयोग से फसल की वृद्धि तो होती ही है साथ ही जमीन की उपजाऊ क्षमता भी बढ़ती है। यह पौधों की बीमारियों मुख्यतः पौधों में लगी फफूंद के नाश के लिए भी काफी प्रभावशाली है।

जैविक खेती का महत्त्व

जैविक खेती पारितंत्र (जल, जंगल, जमीन) और फसलों को रासायनों के दुष्प्रभाव से बचाकर मानव व प्रत्येक जीवधारी को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। जैविक खेती सतत भूमि एवम पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली 'एकीकृत कृषि विकास' की महत्त्वपूर्ण घटक है जो पारितंत्र की सेवाओं को बढ़ाने में काफी कारगर है। जैविक खेती में प्रयोग किये जाने वाली जैविक खाद भूमि की उर्वरता को लम्बे समय तक बना कर रखने के साथ–साथ पर्यावरण को प्रदूषित होने से भी बचाती है साथ ही कम लागत में उत्तम गुणवत्ता वाली अधिक उपज देती है।